

नमाज़ (प्रार्थना)



नए मुसलमानों के लिए मार्गदर्शक

नमाज़ (प्रार्थना)

नए मुसलमानों के लिए मार्गदर्शक

मुहर्रम 1441 / सितंबर 2019

सभी अधिकार सुरक्षित

लेखन एवं प्रकाशन



مركز التعريف بالإسلام

इस्लामिक सूचना केंद्र

सुल्तान काबूस ग्रैंड मस्जिद, मस्कत

सल्तनत ऑफ ओमान

टेलीफैक्स (968) 2450 5170

www.iicomman.om



विषय-सूची

	प्रस्तावना	1
अध्याय 1.	परिचय	2
अध्याय 2.	तहारत (शुद्धि)	4
	▶ शारीरिक अशुद्धियां	
	▶ अनुष्ठान अशुद्धियां (अपवित्रता)	
अध्याय 3.	वुजू	8
	▶ वुजू	
	▶ तयम्मूम	
	▶ वुजू को तोड़ने वाले काम	
अध्याय 4.	नमाज़ (प्रार्थना)	16
	▶ नमाज़ के प्रकार	
	▶ नमाज़ का समय	
	▶ नमाज़ कैसे पढ़ें	
	▶ नमाज़ को खराब कर देने वाले कार्य	
अध्याय 5.	सामूहिक या जमात की नमाज़	21
अध्याय 6.	महिलाओं से संबंधित मुद्दे	25
अध्याय 7.	इस्लामी-कानून की व्याख्या	
	के तहत नमाज़ के अलग-अलग तरीके	27
अध्याय 8.	विभिन्न और शिष्टाचार के तरीके	29
अध्याय 9.	नमाज़ का क्रमवार मार्गदर्शक	35
अध्याय 10.	शब्दकोष	46

प्रस्तावना

इस्लाम में नमाज़ का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। पैगंबर मुहम्मद (ﷺ) ने कहा है; “ हर चीज़ का एक स्तंभ होता है और इस्लाम का स्तंभ नमाज़ है।¹ और यह भी कहा कि क़यामत के दिन सब से पहले जिस चीज़ के बारे में पूछा जाएगा वो नमाज़ है।²

²यह ईश्वर-चेतना (या सजगता) ही तो है जो हमें सभी बुराइयों से बचाती है, जैसा कि हम कुरान में पढ़ते हैं:

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ

नियमित रूप से नमाज़ पढ़ा करो नमाज़ तो वास्तव में अश्लील और बुरे कामों से रोकती है (कुरआन 29:45)

यह ईश्वर-चेतना ही है जो हमें ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य और बड़े पैमाने पर मानव जाति के प्रति अपने कर्तव्य की याद दिलाती है। इसीलिए, इस्लाम में नमाज़ को इतना अधिक महत्व दिया गया है। यही कारण है कि एक नए मुस्लिम को सब से पहले नमाज़ सीखने की ज़रूरत पड़ती है। इस पुस्तक में नमाज़ के उन सभी आवश्यक तत्वों को प्रस्तुत किया गया है जिस से एक नया मुस्लिम इस्लाम के इस महत्वपूर्ण स्तंभ को सही तरह से स्थापित कर सकता है। इसके बाद, नए मुसलमान को प्रोत्साहित किया गया है (और ये प्रोत्साहन आवश्यक है), ताकि वो नमाज़ के अन्य पहलुओं के साथ-साथ इस्लाम की दूसरी इबादतों (उपासना, पूजा) को भी समझ सके।

इस पुस्तक में नमाज़ पढ़ने से पहले की तैयारी या कंडीशंस, दैनिक पाँच अनिवार्य नमाज़ें, शुक्रवार की नमाज़ और दैनिक दूसरी वैकल्पिक नमाज़ें रखी गयी हैं (जिसे अरबी में सुन्नत कहा जाता है)। इस में अन्य प्रकार की नमाज़ों को ज़िक्र नहीं किया गया है, जैसे कि रमज़ान तरावीह की नमाज़, अंतिम संस्कार की नमाज़, ईद की नमाज़, इत्यादि। इन नमाज़ों का विवरण अन्य पुस्तकों में उपलब्ध है।

1 यह पैगंबर का कथन «अर-रबी» द्वारा दर्ज किया गया है

2 यह पैगंबर का कथन "अत-तिर्मिज़ी" द्वारा किया गया है



अध्याय 1 – परिचय

1. नमाज़ (प्रार्थना) इस्लाम का दूसरा स्तंभ है और अल्लाह(सुब्हानहु व ता'आला)³ ने कुरान की कई आयतों में इसके बारे में बताया है। जैसे, अल्लाह (सुब्हान व ता'आला) कुरान में कहते है:

فَاقْبُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا

निससंदेह ईमानवालों पर समय की पाबन्दी के साथ नमाज़ पढना अनिवार्य है।

(कुरान 4:103)

पैगंबर मुहम्मद (स.)⁴ ने कहा है।

जो चीज़ ईमानवालों और ग़ैर-ईमानवालों में अंतर करने वाली है, वो नमाज़ है।

जिसने नमाज़ छोड़ी उसने कुफ़ किया।

(अर-रबी, अत-तिर्मिज़ी और अहमद, मुसलिम, इब्न-माजा, अन्य द्वारा दर्ज की गई हैं)

2. नमाज़ हर समझदार वयस्क मुस्लिम मर्द और औरत पर अनिवार्य है। पैगंबर (ﷺ) ने कहा है कि बच्चे के जवान होने और एक पागल व्यक्ति के समझदार होने तक उन पर नमाज़ की कोई जवाबदेही नहीं होती है⁵
3. एक मुसलमान को हर रोज़ दिन में पांच बार निर्धारित समय पर नमाज़ पढना अनिवार्य है (नमाज़ के समय के लिए अध्याय 4 देखें)।
4. नमाज़ के लिए, आपका पहले पाक (शुद्ध) होना ज़रूरी है। (शुद्धता की इस हालत को तहारा कहा जाता है, अध्याय 2 देखें)।
5. जब आप तहारा की स्थिति में हों तो आपको नमाज़ अदा करने के लिए वुज़ू करना होगा (वुज़ू, अध्याय 3 देखें)।

3 जब हम अल्लाह का नाम लेते हैं तो उसके साथ सुब्हानहु वा ता'आला कहते हैं जिसका अर्थ है वो 'हर अशुद्धि और भूल-चूक से पाक और सर्वोत्तम' है।

4 जब हम पैगंबर का नाम लेते हैं तो हम कहते हैं कि "ऐ अल्लाह उन पर रहमत भेजिए और सलामती बनाये रखिये". यह नबी के लिए की गयी एक दुआ की तरह है.

5 यह पैगंबर के कथन अहमद, अबू दाऊद, इब्न-माजा और अन्य द्वारा दर्ज की गए हैं।



6. इस्लाम के अनुसार सभी कामों को उनके इरादे (नीयत, उद्देश्य या संकल्प) के अनुसार बदला (पुरस्कृत) दिया जाता है। इसलिए, तहारा, वुजू और नमाज़ से पहले दिल में उस काम को करने का इरादा (नीयत) अल्लाह के आज्ञापालन के लिए करना ज़रूरी है।
7. नमाज़ केवल अरबी भाषा में ही पढ़ी जा सकती है, क्योंकि इसमें कुरान का पाठ शामिल है जो अरबी में है, और अल्लाह ने पैगंबर (ﷺ) को नमाज़ का तरीका और इसमें पढ़ने वाली चीजें अरबी में ही सिखाईं। नमाज़ को किसी भी अन्य भाषा में पढ़ा जाए तो वो न केवल उसके अर्थों को बदलेगी, बल्कि उनके आध्यात्मिक उद्देश्य और महत्व को भी बदल देगी।

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ
 حَرَجٍ مَلَأَ آبِيكُمْ إِيرَاهِيمَ هُوَ سَمَّاكُمْ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ
 الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا
 الزَّكَاةَ وَأَعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ

और परस्पर मिलकर प्रयत्न करो अल्लाह के मार्ग में, जैसा कि प्रयत्न करने का अधिकार है (यानी सर्वोत्तम प्रयत्न)। उसने तुम्हें चुन लिया है - और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी। तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से - ताकि रसूल तुमपर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अतः नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक!



अध्याय 2. तहारा (शुद्धि)

नमाज़ पढ़ने से पहले मुसलमान को शारीरिक गंदगी (नजासत) के साथ-साथ अनुष्ठानिक-गन्दगी (बड़ी-गन्दगी ,हृदय अल-अकबर अरबी में कहते है) को शुद्ध करना ज़रूरी है।

अल्लाह (सुब्हानहु वा ता'अला) कहते है:

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ

अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो लगातार उसकी ओर मुड़ते हैं और वह उन लोगों से प्यार करता है जो खुद को शुद्ध और साफ रखते हैं। (कुरान 2:222)

पैगंबर मुहम्मद (ﷺ) ने कहा है:

वुजू नमाज़ की कुंजी है

(तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्न माजा द्वारा दर्ज की गई)

1. शारीरिक गंदगी (नजासत)

नमाज़ पढ़ने से पहले शरीर, कपड़े और उस जगह का जहाँ नमाज़ पढ़नी है, को इन चीज़ों से साफ होना ज़रूरी है:

- मूल; चाहे मानव का हो या जानवर का
- मल; मनुष्यों का और जानवरों का , उन जानवरों और पक्षियों को छोड़कर जिन्हें इस्लाम में मनुष्यों द्वारा खाया जा सकता है।
- खून; सभी प्रकार का खून, उसको छोड़कर जो मछली या मांस तैयार करते समय बाहर आता है।
- उल्टी(कय)
- भोजन या तरल जो पेट से मुंह में वापस आता है।
- वीर्य; तरल जो संभोग या गीले-सपने के दौरान निजी-अंगों से निकलता है।
- हल्के स्पष्ट तरल जो यौन फोरप्ले के दौरान निजी-अंगों से निकलता है।(अरबी में मज़ी)



h. हल्का सफेद तरल जो पेशाब के बाद निकलता है, (अरबी में वदी केहते हैं)

शारीरिक अशुद्धियों की सफाई (नजासत):

शारीरिक अशुद्धियाँ, शरीर या कपड़े या कहीं भी हों तो उन्हें पानी से अच्छी तरह धो कर साफ किया जा सकता है। हाँ, जो गन्दगी कुत्ते से लग जाए जैसे उसका मूत्र, लार या मल, उस गन्दगी को सात बार अच्छी तरह से पानी से धोना चाहिये। जिसमें कि पहली बार पानी के साथ रेत या धूल के साथ रगड़ कर साफ़ किया जाना चाहिये।

सभी मामलों में, अगर धोने के बाद कुछ गंध या जिद्दी दाग रह जाते हैं, तो उन्हें नजरअंदाज किया जा सकता है।

2. अनुष्ठानिक-गन्दगी (बड़ी-गन्दगी ,हदस अल-अकबर)

एक व्यक्ति अनुष्ठानिक या बड़ी गन्दगी की हालत में है, जब वह निम्नलिखित तीन स्थितियों में से किसी स्थिति में हो:

- 'जनाबत' की स्थिति: संभोग या वीर्य के उत्सर्जन के बाद, चाहे व्यक्ति जाग रहा हो या सो रहा हो (गीला सपना)।
- 'हैज़' की स्थिति: एक महिला की माहवारी के दौरान।
- 'निफास' की स्थिति: एक महिला के प्रसवोत्तर रक्तस्राव के दौरान (आमतौर पर 40 दिन)।

अनुष्ठानिक-गन्दगी (बड़ी-गन्दगी ,हदस अल-अकबर) की सफाई

अनुष्ठानिक-गन्दगी से शुद्धिकरण स्नान (अरबी में गुसुल) द्वारा किया जाता है। इसमें निम्नलिखित तरीके से पूरे शरीर को स्नान करना शामिल:

- अपने दिल में गुसुल करने का इरादा करना
- पेशाब करें (यदि संभव हो तो, मूल मार्ग से वीर्य को साफ करने के लिए अच्छा है)
- निजी-अंग जो नाभि से लेकर घुटनों तक और शरीर के किसी भी हिस्से से जो कि शारीरिक अशुद्धियों के संपर्क में आया था, उसको धो लें।



- d. 'बिस्मिल्लाह' कहे (यानी 'अल्लाह के नाम से')
- e. वुजू करें जैसे नमाज़ के लिए करते हैं (अध्याय 3 देखें)
- f. पूरे शरीर को पानी से अच्छी तरह से धोएं, ऊपरी हिस्सों को निचले हिस्सों से पहले, और दाएं हिस्सों को बाएं हिस्सों से पहले ।

तहारत के बारे में महत्वपूर्ण बातें

- a. जो अनुष्ठानिक रूप से शुद्ध नहीं है (अर्थात ताहिर नहीं) वो निम्नलिखित कार्य नहीं कर सकता है:
 1. नमाज़ पढ़ना
 2. रोज़ा(उपवास)
 3. कुरआन को छूना या उससे पढ़ना
 4. मस्जिद में जाना (दाखिल होना)
- b. इस्लाम अपनाने वाले व्यक्ति को अनुष्ठान स्नान करना ज़रूरी है।
- c. अगर किसी को यह यक़ीन है कि कोई गंदगी (नजासत) उसके शरीर को लगी है लेकिन शरीर पर किस स्थान को लगी नहीं जानता है, तो पूरे शरीर को साफ करने के लिए अनुष्ठान-स्नान (गुसुल) करना होगा।



يَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَأَمْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِنْ
كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ
فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ مَا
يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَٰكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

ऐ ईमान वालों (मुसलामानों)! जब तुम नमाज़ की तैयारी करो, तो अपने चेहरे और हाथों (बाहों) को कोहनी तक धो लो; फिर अपने सिर पर हाथ फेरो (गीले हाथ से); और अपने पैरों को एड़ियों तक धो लो। यदि तुम अनुष्ठानिक-अशुद्धता की स्थिति में हो, तो अपने पूरे शरीर का स्नान करो (गुसुल करो)। लेकिन अगर तुम बीमार हो या यात्रा पर हो, या तुम में से कोई शौचालय से जाकर आया है, या तुम महिलाओं (यौन रूप से) से संपर्क किया हो, और तुमको कहीं पानी नहीं मिल रहा है, तो अपने हाथों को साफ रेत या मिट्टी पर लगाओ, और रगड़ो, फिर अपने चेहरे और हाथों पर फेर लो। अल्लाह तुम्हें मुश्किल में डालने नहीं, बल्कि तुमको साफ करने, और तुमपर एहसान पूरा करने की इच्छा रखता है, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।

عن أبي هريرة رضي الله عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال:
«الصلوات المحس، والجمعة إلى الجمعة، كفارة لما بينهن، ما لم تغش الكبائر»

**Abu Hurairah (May Allah be pleased with him)
reported:**

अल्लाह के रसूल ने कहा; "पाँच (दैनिक, हर दिन की) नमाज़ें और शुक्रवार की नमाज़ से दूसरे शुक्रवार की नमाज़ तक जो भी छोटे गुनाह (पाप) होते हे वो माफ़ (क्षमा) कर दिए जाते हैं, जब तक की बड़े गुनाहों (पापों) से बचा जाए "।

मुस्लिम द्वारा दर्ज



अध्याय 3. वुजू

एक बार जब अनुष्ठानिक रूप से शुद्ध हों (यानी ताहिर, बड़ी गंदगी से पाक) हों, तो नमाज़ पढ़ने के लिए वुजू करना होगा। इस अध्याय में तीन भाग हैं; (१) वुजू, (२) तयम्मूम (सूखा वुजू), और (३) ऐसी चीज़ें जो वुजू को तोड़ देती (अमान्य करती) हैं।

1. वुजू

वुजू मुसलमान को शारीरिक रूप के साथ-साथ आध्यात्मिक रूप से नमाज़ में अल्लाह (सुब्हानहु वा ता'अला) सामने आने के लिए तैयार करता है। इसमें एक विशिष्ट (खास) क्रम में विशिष्ट शरीर के अंगों की सफाई शामिल है, जैसा कि अल्लाह (सुब्हानहु वा ता'अला) ने उसके रसूल (ﷺ) द्वारा आदेश दिया है। अल्लाह ने कुरान में कहा है;

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَأَمْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ

ऐ ईमान वालों (मुसलमानों)! जब तुम नमाज़ की तैयारी करते हो, तो अपने चेहरे और हाथों (और बाहों) को कोहनी तक धो लो; फिर अपने सिर पर हाथ फेरो (गीले हाथों से); और अपने पैरों को एड़ियों तक धो लो। (कुरान 5: 6)

पैगंबर (ﷺ) ने कहा है;

जो वुजू ना करे उसकी नमाज़ मान्य (क़बूल) नहीं है

(इब्र माजह, अबू दाऊद और अन्य द्वारा दर्ज)

(Recorded by Ibn Majah, Abu Dawud and others)

वुजू कैसे करें?

सबसे पहले अपने दिल में एक इरादा करें कि मैं वुजू से अपने शरीर की अशुद्धता को सॉफ करने जा रहा हूँ, फिर कहे

بِسْمِ اللّٰهِ

(बिस्मिल्लाह, जिसका अर्थ है 'अल्लाह के नाम से')



फिर निम्नलिखित दो पृष्ठों में बताए गए 8 चरणों (क्रम) को करें



1

दोनों हाथों को कलाई तक तीन बार धोएं। सुनिश्चित करें कि पानी कलाई के सभी भागों और उंगलियों के बीच में भी पहुँच गया है,



2

अपने दाहिने हाथ से अपने मुँह में एक मुट्ठी पानी डालें और अच्छी तरह से कुल्ला करें और जितना हो उतना गहरा कुल्ला करें। ऐसा तीन बार करें।



3

अपने दाहिने हाथ से अपनी नाक साफ करने के लिए जहाँ तक हो सके पानी नाक के अंदर लें, और बाएं हाथ की उंगली से नाक की किसी भी गंदगी को साफ करें। ऐसा तीन बार करें।



4

दोनों हाथों से पूरे चेहरे को धोएँ, यानी कि माथे से ठोड़ी तक और एक कान से दूसरे कान तक, तीन बार धोएं





5

अपनी बांहों को कोहनी सहित अच्छी तरह से तीन बार धोएँ। उंगलियों के बीच का कोई हिस्सा सूखा ना रहे। दाएं बांह से शुरू करें और फिर बाएं बांह धोएं।



6

सिर पर दोनों गीले हाथ सामने से पीछे एक बार फेरें।



7

फिर एक बार अपने दोनों हाथों की गीली उंगली अपने कानों के अंदर डालें और अंगूठे को कान के पीछे के हिस्से पर फेरें।



8

पैर को टखने सहित तीन बार धोएं। उंगलियों के बीच की कोई जगह सूखी ना रहे। पहले दाएं पैर और फिर बाएं पैर को धोएं।



इस तरह से आठ क्रम में वुजू पूरा हो जाएगा| अब आप निम्नलिखित दुआ पढ़ें:

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ
اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लाहु वा अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह । आल्लहुम्मजल्नि
मिनत तव्वाबीन व जअल्नी मिनल मुता तह हिरिन ।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई भी इलाह (पूजा योग्य) नहीं है और
मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह मुझे उन लोगों में बना दे जो
लगातार तौबा (गुनाहों को छोड़ते) करते हैं और उन लोगों में से बना दे जो खुद
को पाक (शुद्ध) रखते हैं।

वुजू के बारे में महत्वपूर्ण बातें

- सुनिश्चित करें कि पानी उन सभी हिस्सों तक ज़रूर पहुँचे जिन्हें धोना ज़रूरी है। लेकिन पानी का अधिक उपयोग करके या शरीर के अंगों को तीन बार से अधिक धो कर पानी बर्बाद न करें।
- अगर कोई मेकअप या अन्य सौंदर्य प्रसाधनों के साथ वुजू करे जिसमें पानी त्वचा या नाखूनों तक नहीं पहुँचे तो वुजू नहीं होता
- यदि किसी को कोई घाव या नाक के नथुने से लगातार खून बहता है, तो उसको किसी कपड़े से ढांक दे ताकि खून उस में जमा हो और फिर वुजू करके नमाज़ पढ़ें। वो महिला भी इसी तरह करे जिसको अपने सामान्य महावारी चक्र के बाहर खून बहता है।
- केवल शुद्ध पानी, जैसे कि नल का पानी, बारिश का पानी, नदी का पानी, कुएं और झरने का पानी, समुद्र का पानी, और बर्फ और ओलों के पानी से वुजू किया जा सकता है। पाक चीज़ें जैसे साबुन, केसर, फूल वगैरह के साथ मिश्रित पानी का भी उपयोग किया जा सकता है।



e. वुजू के लिए अशुद्ध तत्वों से दूषित या जिस पानी का स्वाद, रंग गंधा हो उसका उपयोग नहीं किया जा सकता है।

2. तयम्मूम (सूखा वुजू) के बारे में महत्वपूर्ण बातें

पाकी (पवित्रता) की नियत से मिट्टी या धूल को चेहरे और हाथ पर विशेष ढंग से लगाना (मसह) करना " तयम्मूम कहलाता है, इस से छोटी और बड़ी गंदगियों से पाकी मिल जाती है। तयम्मूम निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जा सकता है:

a. पानी उपलब्ध नहीं है। अल्लाह कुरान में कहता है:

وَإِنْ كُنْتُمْ مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا

और अगर कभी ऐसा हो कि तुम बीमार हो, या सफ़र में हो, या तुम में से कोई शौच करके आए, या तुम ने औरतों को हाथ (यौन रूप से) लगाया हो और फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो और उस से अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो " बेशक अल्लाह नर्मी से काम लेने वाला और बख़्शने वाला है।

(कुरान 4:43)।

b. बहुत ज़यादा ठंड की वजह से पानी का इस्तेमाल न कर सकें, या बीमारी के बढ़ने का ख़तरा हो, या किसी बीमारी से ठीक होने में देरी का डर हो।

c. पानी सिर्फ पीने के लिए बचा हो



तयम्मुम करने के लिए पहले उसका इरादा करें, फिर 'बिस्मिल्लाह' कहें, और फिर नीचे दी गयी दो चीज़ों को करें:

1: अपने हाथों की हथेलियों को साफ मिट्टी पर हलका सा मारें , ढीली मिट्टी को हिला कर हाथ से झाड़ें और फिर अपने हाथ को चेहरे पर एक बार फेरें जैसे वुजू में करते हैं ।



2: अपने हाथों की हथेलियों को फिर से मिट्टी पर हलका सा मारें, ढीली मिट्टी को हिला कर हाथ से झाड़ें और फिर बाईं हथेली से दाहिने हाथ की पीठ को उंगलियों की नोक से कलाई तक फेरें । फिर दाईं हथेली के साथ, बाएं हाथ की पीठ को उंगलियों की नोक से कलाई तक फेरें ।



वुजू पर हदीसों

عَنْ ابْنِ عَمْرٍو، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: مَنْ تَوَضَّأَ عَلَيَّ طَهَّرَ كَتَبَ اللهُ لَهُ بِهِ عَشْرَ حَسَنَاتٍ

इब्र उमर(र.: रज़िअल्लाहु अन्हु, अल्लाह उन से राजी हो) की हदीस में है कि नबी करीम (ﷺ) ने कहा: "जो कोई वुजू करता है जबकि पाकी की हालत में हो तो अल्लाह उसके लिए दस नेकियां (अच्छी खूबियों) लिख देता है।" (तिर्मिज़ी में दर्ज)

حَدَّثَنَا عَمْرٍو بْنُ سَعِيدٍ بْنِ الْعَاصِ، قَالَ كُنْتُ عِنْدَ عُثْمَانَ فَدَعَا بِطَهْوَرٍ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ " مَا مِنْ أَمْرٍ مُسْلِمٍ تَحَضَّرُهُ صَلَاةٌ مَكْتُوبَةٌ فَيُحْسِنُ وُضُوءَهَا وَخُشُوعَهَا وَرُكُوعَهَا إِلَّا كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا قَبْلَهَا مِنَ الذُّنُوبِ مَا لَمْ يُؤْتِ كَبِيرَةً وَذَلِكَ الدَّهْرُ كُلُّهُ "

'अम्र इब्र सा'द इब्र अल-अस ने बताया मैं उस्मान (र.) के साथ था, और उसहें वुजू के पानी के लिए बुलाया गया तो मैं ने अल्लाह के रसूल (ﷺ) को यह कहते हुए सुना: जब एक किसी नमाज़ का समय होता है और अगर कोई मुस्लिम अच्छी तरह से वुजू करता है। और विनम्रता और नर्मी के साथ अपनी नमाज़ पढ़ता है तो उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं, जब तक की उसने कोई बड़ा गुनाह ना किया हो और यह हर समय के लिए लागू होता है (मुस्लिम द्वारा दर्ज)

رَأَى رَسُولُ اللهِ - صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَجُلًا يَتَوَضَّأُ فَقَالَ " لَا تُسْرِفْ لِأَنْ تُسْرِفَ "

"अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने एक आदमी को वुजू करते हुए देखा और कहा: '(पानी) फालतू खर्च मत करो, (पानी) फालतू खर्च मत करो।' यानी की वजू करने में ज़रूरत से ज़्यादा पानी नहीं बहाना चाहिए।

(इब्र माजा द्वारा दर्ज)



3. ऐसे काम जो वुजू को तोड़ देते हैं, (अमान्य करते हैं)

जब कोई नामज पढ़ने के लिए वजू करता है, या ऐसे ही किसी इबादत के लिए वजू करता है जिसमें वुजू की हालत में होना ज़रूरी है जैसे कुरआन को छूना, वगैरह। तो अगर इन में से कोई चीज़ हो जाए तो वुजू टूट जाता है,

1. शरीर के निजी भागों से कुछ निकलना, (मूत्र, मल, गैस, वीर्य और प्रोस्टेटिक तरल)।
2. वुजू करके कोई बहुत गहरी नींद में सो जाए तो वुजू टूट जाता है
3. किसी भी वजह से बेहोश हो जाना
4. किसी भी यौन अंग को(नंगे हाथों से) छूना।
5. अशुद्धियों को छूने से वुजू नहीं टूटता है
6. खून बहना (वुजू के बारे में महत्वपूर्ण बिंदु आइटम C देखें)
7. उल्टी और उबकाई आना।
8. इस्लाम में मना किये गए कार्य करना, जैसे कि पीठ पीछे किसी की बुराईयाँ करना, झूठ बोलना, व्यर्थ की बातें करना आदि, से वुजू नहीं टूटता है

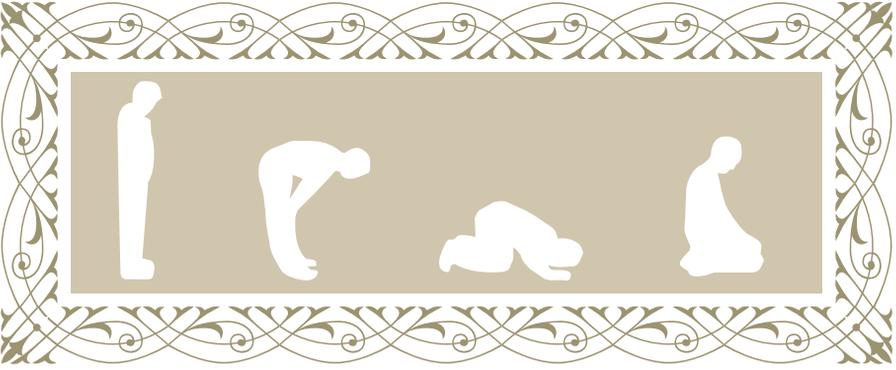


अध्याय 4 - सलाह (नमाज़)

इस अध्याय में चार भाग हैं: (1) नमाज़ के प्रकार (2) नमाज़ की समय सीमा (3) नमाज़ कैसे पढ़ें और (4) वो कार्य जो नमाज़ को अमान्य कर देते हैं।

1. नमाज़ के प्रकार

नमाज़ में निम्नलिखित शारीरिक मुद्राएं शामिल हैं:



खड़े होना, कमर से झुकना, सजदा करना, और बैठना। इस प्रकार खड़े होने से लेकर दो सजदे करने के क्रम को अरबी में एक रकअत कहते हैं। नमाज़ें अलग अलग रकअतों की होती हैं। और समय के हिसाब से भी अलग अलग तरह की होती हैं, जो यहाँ दी गयी हैं,



फ़र्ज़ (अनिवार्य) दैनिक नमाज़ें

	नमाज़	रकात
1	भोर की नमाज़ (फ़ज़्र)	2
2	दोपहर की नमाज़ (ज़ुहर)	4
3	देर दोपहर की नमाज़ (अस्र)	4
4	शाम की नमाज़ (मगरिब)	3
5	रात की नमाज़ (ईशा)	4
6	जुमा (शुक्रवार) की नमाज़	2

सुन्नत नमाज़ यानी फ़र्ज़ के बाद

	नमाज़	रकात
1	फ़ज़्र से पहले	2
2	ज़ुहर के बाद	2
3	मगरिब के बाद	2
4	ईशा के बाद	2
5	अल-वित्त (ईशा के बाद)	3

टिप्पणियाँ:

1. वित्त की नमाज़ ईशा की नमाज़ के बाद भोर से ठीक पहले तक किसी भी वक़्त पढ़ी जाती है (यानी फ़ज़्र की नमाज़ की अज़ान से पहले तक)।
2. जुमा (शुक्रवार) की नमाज़ ज़ुहर की नमाज़ की जगह पढ़ी जाती है और हर इलाके के निवासी पुरुष के लिए अनिवार्य है। इसलिए, अगर किसी की जुमा की नमाज़ छूट जाती है, तो उसे ज़ुहर की नमाज़ पढ़नी होगी। महिलाएं, यात्री और बीमार को जुमा की नमाज़ में शामिल होना ज़रूरी नहीं है, (यानी उन्हें ज़ुहर की नमाज़ पढ़नी होगी)। जुमा की नमाज़ धर्मोपदेश (खुत्बा) से शुरू होती है और उसके बाद जुमा की नमाज़ के दो रकातें पढ़ी जाती हैं। यह केवल जमात से (सामूहिक) ही पढ़ी जाती है और इसके बाद दो या चार रकातें सुन्नत पढ़ी जाती हैं।
3. दूसरी कई और तरह की नमाज़ें होती हैं जैसे रमजान में तरावीह की नमाज़, ईद की नमाज़, जनाज़े की नमाज़ इत्यादि। इन नमाज़ों के बारे में जानने के लिए नमाज़ों की दूसरी किताबें देखी जा सकती हैं।



2. नमाज़ की समय सीमा

हर एक दिन की पांच फ़र्ज़ नमाज़ों को उनके ख़ास समय में ही पढ़ा जाता है

फ़ज़्र की नमाज़	भोर से लेकर सूर्योदय की शुरुआत तक
दोपहर की नमाज़ (ज़ुहर)	जब सूर्य मध्याह्न से ज़रा हट जाए, तो अस्त्र की शुरुआत तक
देर दोपहर की नमाज़ (अस्र)	जब किसी वस्तु की छाया की लंबाई वस्तु की ऊंचाई के समान होती है से लेकर सूर्यास्त की शुरुआत तक
शाम की नमाज़ (मगरिब)	सूर्यास्त के बाद धुंधलके के गायब होने तक
रात की नमाज़ (ईशा)	धुंधलका गायब होने से आधी रात तक

सभी मस्जिदों में नमाज़ का समय लिखा जाता है। इसके अलावा, दुनिया के सभी शहरों में नमाज़ का समय दिखाने वाले मोबाइल फोन एप्लिकेशन Android और iOS में उपलब्ध हैं।

निम्नलिखित समय में नमाज़ पढ़ने की अनुमति नहीं है:

1. सूर्योदय के दौरान, यानी जब सूरज निकलना शुरू होता है, यहाँ तक के क्षितिज से पूरा ऊपर निकल ना जाए ।
2. जब सूर्य मध्याह्न रेखा पर होता है (अर्थात बिल्कुल उपर की ओर यहाँ तक के वह पश्चिम की ओर नहीं जाता) ।
3. सूर्यास्त के दौरान, (यानी सूर्यास्त की शुरुआत से, जब तक सूरज क्षितिज पर पूरी तरह से गायब नहीं हो जाता) ।

निम्नलिखित स्थितियों में नमाज़ को स्वीकार नहीं किया जाता है:

- a. फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ने के बाद से जब तक कि सूरज पूरी तरह निकल ना जाए, (सिवाए



आवश्यक नमाज़ को छोड़कर जैसे अंतिम संस्कार की नमाज़)।

- b. अस्त्र की नमाज़ के बाद से सूर्यास्त तक, (सिवाए आवश्यक नमाज़ को छोड़कर जैसे अंतिम संस्कार की नमाज़)।

3. नमाज़ कैसे पढ़ें

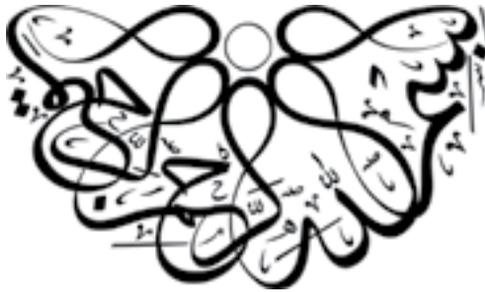
पाँच दैनिक नमाज़ों और वैकल्पिक नमाज़ों की क्रम-दर-क्रम क्रियाएँ अध्याय 9 में दिखाई गई हैं। सभी नमाज़ें मक्का में काबा की ओर सामान्य दिशा में की जाती हैं। काबे की इस सामान्य दिशा को क़िबला कहा जाता है। क़िबले की दिशा दिखाने वाले मोबाइल फोन एप्लिकेशन Android और iOS में उपलब्ध हैं।

4. ऐसे कार्य जो नमाज़ को अमान्य कर देते हैं

नमाज़ को अमान्य करने वाले कार्यों की दो श्रेणियाँ हैं: (a) मन की स्थिति से संबंधित कार्य, यानी आवक स्थिति, (b) शारीरिक कार्य।

A. मन की स्थिति से संबंधित कार्य

1. नमाज़ के दौरान इरादा बदलना। उदाहरण के लिए, नमाज़ के प्रकार को बदलना, अनिवार्य नमाज़ को वैकल्पिक से बदलना।
2. गेहरी नींद या बेहोशी के कारण चेतना खोना। ऐसा इसलिए है क्योंकि मन की उपस्थिति नमाज़ की एक पूर्व शर्त है।
3. जानबूझकर नमाज़ से हट कर बहुत ज़्यादा दूसरे मुद्दों के बारे में सोचना



B. शारीरिक कार्य

a. नमाज़ के निम्नलिखित आवश्यक कार्यों (या स्तंभों) में से किसी को छोड़कर:

1. इरादा(नीयत)
2. खड़े होना (क्रियाम)
3. तकबीरुल इहराम (नमाज़ की शुरुआत में अल्लाहु अकबर कहते हैं)
4. ध्यान (मन की उपस्थिति)
5. सभी रकाअतो में अल-फातिहा का पढ़ना
6. झुकना(रुकू)
7. सजदा
8. बैठना (तशह हुद)
9. अत्तसलीम- "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहना ("आप सब पर सलामती और अल्लाह की रहमत हो")

b. नमाज़ में खाना या पीना ।

c. नमाज़ से असंबंधित किसी भी चीज के बारे में बोलना

d. नमाज़ में मुस्कराना (जान बूझ कर) और हँसना ।

e. नमाज़ से असंबंधित बार-बार हलचल करना ।

f. कुछ भी जो वुज़ू को तोड़ कर दे



अध्याय 5 – सामूहिक नमाज़

(इस अध्याय को अध्याय 4 और 9 पूरा करने के बाद पढ़ें)

A. व्यक्तिगत नमाज़ और सामूहिक नमाज़ में अन्तर:

1. जब आप व्यक्तिगत (यानी अकेले) नमाज़ पढ़ें तो आप इक्रामत पढ़ें (जैसा कि अध्याय 9 में समझाया गया है)। सामूहिक नमाज़ में मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) बाकी सभी की ओर से इक्रामत पढ़ें। (महिलाएं किसी भी नमाज़ में इक्रामाह ना पढ़ें)।
2. जब आप अकेले नमाज़ पढ़ें तो आप आहिस्ता आवाज़ में नमाज़ पढ़ें। लेकिन जब आप सामूहिक नमाज़ पढ़ें तो आप इमाम को बड़ी स्वर में पढ़ते हुए सुनें;
 - a. शुरू में 'अल्लाहु अकबर', (तकबीरतुल इहरम अरबी में)।
 - b. पहले दो रकातो में अल-फातिहा का पढ़ना, (ज़ुहर और अस्त्र की नमाज़ों को छोड़कर, क्योंकि ये नमाज़ें आहिस्ता आवाज़ में पढ़ते हैं)।
 - c. अल-फातिहा का पढ़ना आखिर की दो रकातो में (जिस नमाज़ में सूरह की आवश्यकता होती है)
 - d. 'अल्लाहु अकबर' जब झुकते, सजदा करते, बैठते और खड़े होते हुए।
 - e. 'सामियाल्लाहु लिमन हमिदा' जब झुकने वाली स्थिति (रुकू) में खड़े होते हैं।
 - f. "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" जब इमाम नमाज़ का समापन करता है।



आप आहिस्ते दोहराएँ जो इमाम पढ़े सिवाय “c” में आप सूरह (सिर्फ सुनोगे) पढ़ोगे नहीं, और 'e' में आप इमाम को नहीं दोहराते हैं, लेकिन आप खड़े होने के बाद। कहते हैं रब्बना व लकल हम्द'

- जब आप नमाज़ अकेले पढ़े तो अल-फातिहा और सूरह आहिस्ते से पढ़ते हैं। सामूहिक नमाज़ में आप केवल अल-फातिहा आहिस्ते से पढ़ते हैं और फिर इमाम जो सूरह पढ़े उसे सुनते हैं।

B. सामूहिक नमाज़ में कैसे जुड़ें

यदि आप किसी भी सामूहिक नमाज़ में देर से आते हैं और देखते हैं कि नमाज़ पहले ही शुरू हो चुकी है, तो आप उस नमाज़ में शामिल हो सकते हैं और अपनी छुटी हुई नमाज़ जब इमाम “अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह” के साथ नमाज़ को समाप्त करदे तो अपनी नमाज़ पूरी कर लें। निम्नलिखित दो उदाहरण हैं जो बताते हैं कि सामूहिक नमाज़ में कैसे शामिल होना है।

उदाहरण 1

ईशा की नमाज़ में आपने पाया कि इमाम दूसरी रकाअत में अल-फातिहा पढ़ रहे हैं। प्रार्थना इस प्रकार है:

- “तोऊज़” पढ़ें
- “अल्लाहु अकबर” बोलें
- “आऊज़ु बिल्लाही मिनश शैतानिर्राजीम” बोलें
- इमाम के बाद अल-फातिहा पढ़ें।
- अल-फातिहा के बाद इमाम जो सूरह पढ़े वो सुने।
- नमाज़ के अंत तक इमाम का पालन करें
- जब इमाम नमाज़ को पूरा करले, तो 'अल्लाहु अकबर' कहे बिना खड़े हो जाईये
- अल-फातिहा के बाद सूरह पढ़ें।
- झुकना और सजदा करना और फिर खड़े होना।
- अब आप उस बिंदु पर हैं जहां आप नमाज़ में शामिल हुए थे।
- 'अल्लाहु अकबर' कहे बिना बैठ जाएँ
- “अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह” कहते हुए नमाज़ खतम करें



उदाहरण 2

Iजुहर की नमाज़ में आपने पाया कि इमाम पहली बार बैठा है तो नमाज़ में इस प्रकार से जुड़ें।

1. “तोऊज़” पढ़ें
2. “अल्लाहु अकबर” बोलें
3. “आऊज़ु बिल्लाही मिनश शैतानिर्राजीम” बोलें
4. बैठकर नमाज़ के अंत तक इमाम का पालन करें।
5. जब इमाम नमाज़ को पूरा करले, तो 'अल्लाहु अकबर' कहे बिना खड़े हो जाओ
6. अल-फातिहा पढ़े. झुके, सजदा करे और खड़े हो जाईये (यह पहली रकाअत है)।
7. अल-फातिहा पढ़े., झुके, सजदा करे और बैठ जाए (यह दूसरी रकाअत है)।
8. अब आप उस बिंदु पर हैं जहां आप नमाज़ में शामिल हुए थे।
9. यदि आप नमाज़ में शामिल होने के बाद पहली अत-तहियात पढ़ली थी, तो “अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह” कहकर नमाज़ को समाप्त करें। यदि आपने नमाज़ में शामिल होने समय पहली अत-तहियात नहीं पढ़ी थी, तो इसे पढ़ें और फिर नमाज़ को समाप्त करें।

आप किसी भी बिंदु पर सामूहिक नमाज़ में शामिल हो सकते हैं और अपनी छूटी हुई नमाज़ को पूरा कर सकते हैं जैसे आपने उदाहरणों में दिखा है। मुद्दा यह है कि इमाम के साथ नमाज़ का अंत करें, जो भी छूट गया वो बाद में पूरा करलें।



जमात की (सामूहिक) नमाज़ पर हदीसें

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ وَمَنْ صَلَّى
الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا صَلَّى اللَّيْلَ كُلَّهُ

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने कहा: वह जो 'ईशा' की जमात की नमाज़ का पढता है, वह ऐसा है जैसे उसने आधी रात तक नमाज़ पढ़ी, वह जो सुबह की जमात की नमाज़ पढ़ता है, वह ऐसा है जैसे उसने पूरी रात नमाज़ पढ़ी।

(मुस्लिम और ए-तिर्मिदी द्वारा दर्ज)

عَنْ عَثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ « مَنْ تَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ فَأَسْبَغَ الوُضُوءَ ثُمَّ مَشَى إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ فَصَلَّاهَا مَعَ النَّاسِ أَوْ مَعَ الْجَمَاعَةِ أَوْ فِي الْمَسْجِدِ عَفَرَ اللَّهُ لَهُ ذُنُوبَهُ »

यह बताया किया गया है कि हज़रत उस्मान इब्न अफफान ने कहा: «मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ), को कहते हुए सुना है: जो कोई वुज़ू को ठीक से करता है, निर्धारित नमाज़ पढ़ने के लिए निकलता है, और लोगों के साथ मस्जिद में जमात से नमाज़ पढ़ता है, अल्लाह उसके सारे गुनाहों को माफ़ कर देता है”।

(निसाई द्वारा दर्ज किया गया)



अध्याय 6 - महिलाओं से संबंधित मुद्दे

इस किताब में तहारा (शुद्धि, पाकी) और नमाज़ से संबंधित मामले जो पुरुषों और महिलाओं के लिए समान हैं, आ चुके हैं। यह अध्याय उन मुद्दों की बात करेगा जो औरतों के लिए ख़ास हैं।

1. महिलाओं को उनके महावारी या प्रसवोत्तर रक्तस्राव के दौरान नमाज़ (या उपवास) करने की आवश्यकता नहीं होती है।
2. महिलाओं को जैसे ही माहवारी या प्रसवोत्तर रक्तस्राव के लक्षण दिखाई देते हैं, भले ही ये संकेत मासिक धर्म या प्रसवोत्तर रक्तस्राव की सामान्य अवधि से पहले हों पाकी की हालत में आने के लिए गुस्ल (अनुष्ठान स्नान) करना होगा।
3. जब एक महिला पाकी की हालत में लौटती है, तो जो नमाज़े माहवारी या प्रसवोत्तर रक्तस्राव के दौरान छुटी थी उन्हें पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती।
4. रक्तस्राव को माहवारी माना जाता है जब 3-10 दिनों के बीच होती है। यदि रक्त तीन दिनों से कम समय तक बहता है, तो इसे माहवारी नहीं माना जाता है। उसे गुस्ल (अनुष्ठान स्नान) करना होगा और नमाज़े पढ़ना होगा। इसके अलावा छुटी हुई नमाज़े पढ़नी होगी।
5. माहवारी की अवधि प्रत्येक महिला के लिए अलग-अलग होती है। अवधि में एक दिन को उस घंटे से गिना जाता है जो अगले दिन उसी घंटे से शुरू होता है। उदाहरण के लिए, यदि माहवारी सुबह 9 बजे शुरू होती है, तो अगली सुबह 9 बजे इसे एक दिन गिना जाता है।
6. जब कोई महिला माहवारी के अंत के सामान्य संकेत दिखें जैसे सूखापन या सफेद दूधिया स्राव तो वह स्नान करे और नमाज़ पढ़े।
7. यदि माहवारी 10 दिनों से अधिक हो या प्रसवोत्तर रक्तस्राव 40 दिनों से अधिक हो, तो महिला गुस्ल करे और नमाज़ पढ़ना फिर से शुरू कर दे।



8. जिन महिलाओं को माहवारी नियमित अवधि की होती है अगर रक्त प्रवाह नियमित अवधि से अधिक समय तक जारी रहे, उन्हें गुस्ल करने से पहले दो दिनों (48 घंटे) तक इंतजार करना चाहिए, या एक दिन (24 घंटे) तक प्रतीक्षा करें अगर डिस्चार्ज रहे। उदाहरण के लिए, यदि किसी महिला की नियमित अवधि छे दिनों की है और रक्त प्रवाह जारी रहता है, तो उसे आठ दिनों के अंत में अनुष्ठान स्नान कर लेना चाहिए या सातवें दिन के अंत में अगर डिस्चार्ज जारी रहता है। अनियमितताओं और शुरुआती बच्चियों के लिए, 10 दिनों का नियम (ऊपर बिंदु 7) लागू होता है।
9. माहवारी से पहले होने वाले डिस्चार्ज को माहवारी नहीं माना जाता है।
10. माहवारी बंद होने के बाद होने वाले डिस्चार्ज को 24 घंटे के लिए माहवारी माना जाता है। इन 24 घंटों के भीतर अगर किसी को माहवारी के अंत लक्षण दिखाई देते हैं तो उसे अनुष्ठान स्नान कर लेना चाहिए।
11. नाबालिग छोटी बच्चियों द्वारा अनुभव किया जाने वाला रक्तस्राव (चंद्र कैलेंडर पर 9 वर्ष से कम या सूर्य कैलेंडर में 8 वर्ष) और ऐसी महिलाएं जिन्हें पहले ही माहवारी बंद हो चुकी हो , उन्हें माहवारी का रक्त नहीं माना जाता है। वे गुस्ल नहीं करते हैं और नमाज़ जारी रखते हैं।
12. मासिक धर्म या प्रसवोत्तर रक्तस्राव के बाद गुस्ल (अनुष्ठान स्नान) करते समय, महिलाओं को अपनी चोटी के बाल खोल देना चाहिए ताकि बाल पूरी तरह से धोए जा सकें। हालांकि, महिला को संभोग के बाद अपने चोटी के बाल खोलने की ज़रूरत नहीं। पानी को सर के खाल तक पहुँचाना ज़रूरी है।
13. महिलाएं मस्जिदों में सामूहिक नमाज़ में शामिल हो सकती हैं। हालाँकि, पैगंबर(स.) ने कहा है 'महिला की नमाज़ उसके घर में ज़्यादा अच्छी है'। फिर भी, अगर वह सामूहिक नमाज़ में शामिल होने के लिए जाना चाहती है, तो उसे उचित कपड़े पहनना चाहिए और हर श्रंगार से मुक्त होना चाहिए।



अध्याय 7 - इस्लामी कानून के हिसाब से नमाज़ की हालतों के प्रकार

इस्लाम का कोई कानून हों या इबादत या ज़िन्दगी जीने के तरीके, इन सभी को कुरान और रसूलुल्लाह (स.) की सुन्नतों (शिक्षाओं) से ही लिया जाता है। इस्लामी कानून की विचारधारा कुछ मुद्दों पर थोड़ी अलग-अलग है। इसके आधार पर इन विचारधाराओं को अलग अलग "मज़ाहिब" भी कहा जाता है।

हालांकि किसी भी बड़े मुद्दे पर ये विचारधाराएं हमेशा एक ही होती हैं, जैसे की ईमान, या इबादतों की व्याख्या। कुछ मामलों में थोड़े बहुत बदलाव आपको, कुरान की समझ और हदीस के हिसाब से मिल सकते हैं।

दुनिया भर के मुसलमान एक ही तरह की नमाज़ें पढ़ते हैं और सब की नमाज़ समान है। थोड़े बदलाव यहाँ बताये जा रहे हैं

1. वुजू के शुरू में 'बिस्मिल्लाह' कहना
2. तकबीरुल एहरम कहते समय और झुकते उठते समय हाथ उठाना
3. तकबीरुल एहरम से पहले या बाद में तोविज़ कहना
4. खड़े होते समय हाथों को छाती पर बंधना
5. कुरआन का पढ़ना अल-फ़ातिहा के बाद जुहर और अस्त्र की पाहली और दूसरी रकअत में
6. नमाज़ में दुआएँ पढ़ना(कुनूत)
7. अल-फ़ातिहा के बाद ज़ोर से आमीन कहना



ये विविधताएँ नमाज़ की ख़ूबसूरती को ख़तम नहीं करती । ख़ास बात यह है कि हम अल्लाह के हुक्मों को मानें और अपनी तक़वे (ईश्वर-चेतना) को बनाए रखे । हमारे लिए ज़रूरी है कि हम उन कानूनों को माना करें जो कुरान और पैगंबर (ﷺ) की मंशा और हुक्मों के हिसाब से हो ।

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالرَّسُولِ وَعَاقَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ
ذَوَى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَأَبْنَ السَّبِيلِ وَالسَّالِفِينَ وَفِي الرِّقَابِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَعَاقَى الزَّكَاةَ وَالْمُؤْفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي
الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

नेकी यह नहीं कि अपने मुँह मश्रिक़ या मगरिब की तरफ़ करलो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और फ़रिशतों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिश्तेदारों को और यतीमों और मिसकीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ क़ाएँ करे और ज़कात अदा करे, और जब वह वादा करें तो उसे पूरा करें, और सब्र करने वाले सख़्ती में और तकलीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (कुरान 2:177)



अध्याय 8 - विविध मुद्दे और शिष्टाचार

निम्नलिखित कामों को नमाज़ के लिए करना चाहिए

नमाज़ की तैयारी

नमाज़ से पहले टॉयलेट जाकर खुद को आराम दें और सभी दबाव वाले मुद्दों को ख़तम करें ताकि तनाव मुक्त स्थिति में रहें। इससे आपको अपनी नमाज़ में सतर्कता और एकाग्रता बनाए रखने में मदद मिलेगी। नमाज़ की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक विनम्रता और सादगी है। अल्लाह ता'आला कहते हैं;

★ فَذُفَالِحِ الْمُؤْمِنُونَ ★ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ

सफल तो असल में ईमान वाले (इस्लाम को मानने वाले) हैं, जो अपनी नमाज़ों में विनम्र (और चौकस) हैं। (कुरान 23: 1-2)

नमाज़ के लिए पोशाक

अल्लाह ता'आला ने हमें नमाज़ अदा करते समय अच्छी तरह से कपड़े पहनने का आदेश दिया है;

يَبْنَئِءَادَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ

**ऐ आदम के बच्चों, हर मस्जिद (यानी हर नमाज़) में बन सवरं जाया करो।
(कुरान 7:31)**

तुम्हारे कपड़े तुम्हारे सभी निजी भागों को ('अवरा) को छिपाएं। पुरुषों के लिए, अवरा नाभि से घुटनों से नीचे तक के शरीर के हिस्सों को छिपाना है। चाहिए की शालीनतापूर्वक और उचित रूप से कपड़े पहने, जो नमाज़ में अल्लाह के सम्मान के अनुरूप हो। महिलाओं के लिए, पूरे शरीर को उचित रूप से छिपाना ज़रूरी है, चेहरे और हाथों को छोड़कर। तंग और पारदर्शी कपड़े भी पुरुषों और महिलाओं के लिए मना हैं। इसके अलावा, पुरुषों को कभी भी सोने या रेशम पहनने की अनुमति नहीं है



जमात की नमाज़

पुरुषों के लिए पाँच दैनिक नमाज़ों को जमात में पढ़ना जरूरी है, जब तक कि ऐसी कोई वजह न हो जैसे बीमारी, अत्यधिक मौसम की स्थिति, मौत का डर वगैरह पैगंबर (स.) ने कहा है; जमात की नमाज़ अकेले नमाज़ पढ़ने की तुलना में सत्ताईस गुना ज़्यादा सवाब (इनाम) वाली है⁶

महिलाओं के लिए जमात की नमाज़ जरूरी नहीं है।

वैकल्पिक नमाज़ें

वैकल्पिक नमाज़ें या स्वैच्छिक नमाज़ें पांच दैनिक नमाज़ों के साथ पढ़ी जाती हैं, ताकि ज़्यादा सवाब प्राप्त किया जा सके और अल्लाह के करीब हो सकें। अध्याय 4, खंड 1 में इस का उल्लेख है:

- ▶ मस्जिद में जाने पर दो रकात नमाज़ पढ़ते हैं। इस सुन्नत को तहियतुल मस्जिद या 'मस्जिद का सलाम' कहा जाता है।
- ▶ सूर्योदय के बाद के दो या चार रकात दोपहर से ठीक पहले जब सूर्य मध्याह्न के करीब पढ़ते हैं। इसे जुहा की नमाज़ कहते हैं।
- ▶ ईशा की नमाज़ से पहले दो या चार रकात।
- ▶ देर रात की दो या दो से अधिक रकअत नमाज़ (उन्हें क्रियामुल लैल कहा जाता है)।

वैकल्पिक नमाज़ें दो-दो रकातों में पढ़ी जाती हैं। उन्हें मस्जिद, घर या अन्य स्थानों पर पढ़ा जा सकता है। पैगंबर (स.) ने अपने घरों में भी कुछ वैकल्पिक नमाज़ें पढ़ने कहा है।

⁶ यह पैगंबर(स.) की बातें अर-रबी, बुखारी, इब्न माजह और अन्य द्वारा दर्ज की गई हैं



यात्रा करते समय की नमाज़ें

जब आप यात्रा कर रहे होते हैं, तो आपको नमाज़ों को छोटा करना ज़रूरी होता है। जुहर, अस्त्र और ईशा की चार रकातों की जगह केवल दो रकातें पढ़ेंगे। फ़ज़्र और मगरिब की नमाज़ कम नहीं होती। जब आप जुहर, अस्त्र और ईशा की नमाज़ को छोटा करते हैं, तो आप केवल पहले दो रकातें पढ़ते हैं फिर आप पूरी तहियत पढ़ेंगे।

आप मिला सकते हैं (1) जुहर की दो रकात को अस्त्र की दो रकात से जोड़ सकते हैं, किसी भी समय जुहर के बाद से मगरिब से पहले तक, (2) मगरिब को ईशा की नमाज़ से मिला सकते हैं, किसी भी समय मगरिब के बाद से मध्यरात्रि तक। जब आप नमाज़ों को जोड़ते हैं तो आप विल को छोड़कर वैकल्पिक नमाज़ें (सुन्न) नहीं पढ़ेंगे

यात्रा करते समय, आप शुक्रवार की नमाज़ पढ़ने के लिए बाध्य नहीं हैं, (यानी आप जुहर की नमाज़ पढ़ेंगे)

बीमार की नमाज़

बीमारी की हालत में इस तरह से भी नमाज़ पढ़ी जा सकती है:

1. यात्री की तरह बीमार भी नमाज़ को मिला भी सकता है और छोटा भी कर सकता है।
2. अगर वुजू नहीं कर सकता है तो तयम्मूम करले
3. बैठकर या लेटकर नमाज़ पढ़ सकता है, और अगर झुककर और सजदा करने में असमर्थ हो, तो केवल सिर झुकाकर इन क्रियाओं को कर सकता है।
4. यदि नमाज़ में से कुछ भी नहीं करने में असमर्थ हो, तो अपनी आंखों के इशारे से नमाज़ पढ़ सकता है।
5. यदि उपरोक्त में से कुछ भी संभव नहीं हो, तो हर फर्ज नमाज़ के लिए तो पांच तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहे।
6. यदि अभी भी उपरोक्त में से कोई भी संभव नहीं है, तो बीमार व्यक्ति अब प्रार्थना करने के लिए बाध्य नहीं है, क्योंकि अल्लाह हमें अपनी क्षमताओं से ज़्यादा नहीं डालता है।



छूटी हुई नमाज़ें

नमाज़ के बारे में मुसलमान को हमेशा सतर्क रहना चाहिए। अल्लाह ने कुरान में उन लोगों को चेतावनी दी है जो अपनी नमाज़ों के मामले में लापरवाह होते हैं:

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ * الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ

**नमाज़ियों के लिए ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से ग़फलत(लापरवाही) करते हैं
(कुरान107:4-5)**

भूलने या बीमारी या नींद की वजह से एक फर्ज नमाज़ छूट जाए तो जैसे ही याद आए या नींद से जागे फ़ौरन नमाज़ पढ़ ले।

नमाज़ में कुछ भूल जाए

यदि आप नमाज़ के एक हिस्से को भूल गए हैं (आवश्यक भागों के अलावा जो पूरी तरह से नमाज़ को अमान्य करते हैं, अध्याय 4, आइटम 4-b में बताया गया है), तो आपको नमाज़ में अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहने से पहले बाद दो सजदे करे (सजदे-ए-सहु)



नमाज़ के बाद की दुआ

जब आप अपनी नमाज़ खतम करें, विशेष रूप से पाँच दैनिक अनिवार्य नमाज़ों तो अल्लाह से दुआ करना चाहिए:

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ 3 x

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ، وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

اللَّهُمَّ أَعِنَّا عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

اللَّهُمَّ إِنَّكَ غَفُورٌ كَرِيمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُوعَنَّا

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَسَلَّمْتَ وَبَارَكْتَ عَلَى سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ فِي الْعَالَمِينَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

- ▶ तीन बार अस्तागफिरुल्लाह पढ़ना
- ▶ अल्लाहुम्मा अन्तस सलाम वा मिनकस-सलाम. तबारकता या ज़ल-जलाली वल-इकराम
- ▶ अल्लाहुम्मा आइ'न्नी अला ज़िकरिका वा शुकरिका वा हुसनि ईबादतिक
- ▶ अल्लाहुम्मा इन्नका अ'फुवुन करीमुन तुहिब्बुल अफवा फा अफुअन्ना
- ▶ अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सख्यिदिना मुहम्मद, व अला आली सख्यिदिना मुहम्मद, कामा सल्लैता व सल्लमता व बरकता अला सख्यिदिना इब्राहिम, वा अल आली सख्यदिन इब्राहिम, फिल आलामिना इन्नका हमीदुम मजीद
- ▶ ऐ अल्लाह, मैं आपसे माफी चाहता हूँ (तीन बार)
- ▶ या अल्लाह तू ही अस-सलाम है और सलामती तेरी ही तरफ से है, तू बरकत वाला है, एह जलाल वाले और ईज्ज़त बख्शने वाले
- ▶ या अल्लाह, मेरी मदद कर तेरा ज़िक्र करने में, और तेरा शुक्र अदा करने में और तेरी अच्छी इबादत करने में
- ▶ ऐ अल्लाह, बेशक आप बहुत माफ़ करने वाले है, और माफ़ करने को पसंद करते हैं, तो आप मुझे माफ़ कर दीजिए
- ▶ ऐ अल्लाह, मुहम्मद (स.) और उनके परिवार को दिव्य अनुग्रह, सलामती और बरकतें प्रदान कर दीजिए, जैसा कि आपने इब्राहिम (अ.) और उसके परिवार को दिव्य अनुग्रह, सलामती और बरकतें प्रदान किया था, क्योंकि आप सभी तारीफ वाले, बुजुर्गी वाले हैं



आप अरबी में या अपनी भाषा में कोई भी अन्य दुआ कर सकते हैं। कुरआन में कई दुआएँ हैं, जिनको आप नमाज़ के बाद या किसी अन्य समय में कर सकते हैं। यहाँ पर सूरह बक्ररह के आखिरी दो आयतों में आने वाली दुआ दी गयी है

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ ، عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۗ وَاعْفُ عَنَّا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

रब्बाना ला तुआ खिज़ना इन नसीना औ आखत अना रब्बना वला तहमिल अलैना इसरन कमा हमलतुहु अलल लज़ीना मिन क़बलिना, रब्बना वला तुहम्मिलना माला ताक़त लना बेही, व अफ़ु अन्ना, वग़फ़िर लना वरहम्मा, अंता मौलाना फ़नसुरना अलल क़ौमिल काफ़िरीन

ऐ हमारे रब! अगर हम भूल जाते हैं या गलती कर जाते हैं तो हमारी पकड़ ना करना; ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर ऐसा बोझ मत डाल जो तूने हम से पहलों हर डाला था; ऐ हमारे रब! जितना हम सहन करने की ताकत रखते हैं, उससे अधिक बोझ हम पर ना डाल है। हमारे पापों को अनदेखा कर और हमें क्षमा प्रदान कर। हम पर दया कर। तू हमारा रक्षक है हमारी मदद कर काफ़िरीों के खिलाफ़। ”

(कुरान 2:286)



अध्याय 9 - नमाज़ की क्रमवार मार्ग दर्शन

निम्नलिखित प्रश् में नमाज़ के पढ़ने में शामिल विभिन्न चरणों को प्रदर्शित किया गया है। हर नमाज़ में एक ख़ास रकात की संख्या होती है जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दिखाया गया है। (क्रम 1 से 8 मिल कर एक रकात होती है)

नमाज़	रकात	क्रम
फ़ज़्र	2	1-16
ज़ोहर	4	1-14, 2-16
अस्र	4	1-14, 2-16
मगरिब	3	1-14, 8-16
इशा	4	1-14, 2-16
जुमा की नमाज़	2	1-16
सुन्नह	2	1-16
वित्त	3	1-14, 8-16

नमाज़ का निम्नलिखित उदाहरण उस व्यक्ति के लिए है जो व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहा है। जब आप जमात में (सामूहिक) नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो अंतर के लिए, अध्याय 5 देखें।

नमाज़ की गाइड:

क्रम 1: महिलाओं की सभी नमाज़ों के लिए कोई इक़ामत नहीं है या पुरुषों के लिए जमात में नमाज़ पढ़ने पर नहीं है।

फ़ज़्र की नमाज़: (2 रकात, क्रम 1-16 और निम्नलिखित पर ध्यान दें)

क्रम 2: जब आप व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटा सूरह (जैसे अन-नास या अल-इखलास या अल-अस्र) पढ़ेंगे।

क्रम 8: जब आप व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटा सूरह (जैसे अन-नास या अल-इखलास या अल-अस्र) पढ़ेंगे।

क्रम 14: ताहियत ए और बी पढ़ें और क्रम 15 और 16 पर जाएं।



ज़ोहर और अस्त्र की नमाज़ (4 रकात, क्रम 1-14, 2-16 और निम्नलिखित पर ध्यान दें)

क्रम 14: ताहियत ए पढ़ें को फिर अल्लाहु अकबर 'कहकर खड़े हों और क्रम 2 से 16 तक आगे बढ़ें। जब आप क्रम 14 पर पहुंचे हैं तो दूसरी बार तहियात ए और बी का पाठ करें और क्रम 15 और 16 पर आगे बढ़ें।

मगरिब नमाज़ (3 रकात, क्रम 1-14, 8-16 और निम्नलिखित पर ध्यान दें)

क्रम 2: जब आप व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटा सूरह (जैसे अन-नास या अल-इखलास या अल-अस्त्र) पढ़ेंगे।

क्रम 8: जब आप व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटा सूरह (जैसे अन-नास या अल-इखलास या अल-अस्त्र) पढ़ेंगे।

क्रम 14: ताहियत ए पढ़ें को फिर अल्लाहु अकबर 'कहकर खड़े हों और क्रम 8 से 16 तक आगे बढ़ें सिर्फ़ अल-फातिहा का पाठ करेंगे क्रम 8 पर। जब आप क्रम 14 पर पहुंचे हैं तो दूसरी बार तहियात ए और बी का पाठ करें और क्रम 15 और 16 पर आगे बढ़ें।

ईशा की नमाज़ (4 रकात, क्रम 1-14, 2-16 और निम्नलिखित पर ध्यान दें)

क्रम 2: जब आप व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटा सूरह (जैसे अन-नास या अल-इखलास या अल-अस्त्र) पढ़ेंगे।

क्रम 8: जब आप व्यक्तिगत रूप से नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटा सूरह (जैसे अन-नास या अल-इखलास या अल-अस्त्र) पढ़ेंगे।

क्रम 14: ताहियत ए पढ़ें को फिर अल्लाहु अकबर 'कहकर खड़े हों और क्रम 8 से 16 तक आगे बढ़ें सिर्फ़ अल-फातिहा का पाठ करेंगे क्रम 8 पर। जब आप क्रम 14 पर पहुंचे हैं तो दूसरी बार तहियात ए और बी का पाठ करें और क्रम 15 और 16 पर आगे बढ़ें।

शुक्रवार की नमाज़ और सुन्नत की नमाज़ एक तरह से फ़ज़्र के जैसे पढ़ी जाती है। विल की नमाज़, मगरिब की नमाज़ के समान होती है, सिवाय इसके कि जब आप दूसरी बार क्रम 8 में होते हैं, तो आप अल-फातिहा का पाठ करने के बाद एक छोटी सूरत पढ़ते हैं।



क्रम
1

तैयारी (इस्तिदाद)

‘इक्रामाह’ पढ़ें *

‘तवजीह’ पढ़ें *

कहिये: "अल्लाहु अकबर"

(अल्लाह सबसे महान है)

कहिये: "अ ऊजू बिल्लाही मिनश
शैतानीर रजीम"

(मैं शरण चाहता हूँ अल्लाह की शैतान
मरदुद से)

क्रम
2

खड़े होना (क्रियाम)

पढ़ना: سورة الفاتحة

सूरह ‘अल-फातिहा’ *



क्रम
3

झुकना (रुकू)

कहिये: "سبحان ربي العظيم" x3

"सुभाना रब्बियाल अज़ीम" 3 बार (मेरा
रब किसी भी कमी या दोष से पाक है, वो
बहुत अज़मत वाला है)



झुकने पर कहते हैं:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
4

खड़े होना (क्रियाम)

कहिये: "ربنا ولك الحمد"

"रब्बना व लकल हम्द"

(ऐ हमारे रब, आप ही के लिए तो तमाम
तारीफें हैं)



खड़े होने पर कहते हैं: समि अल्लाहु लिमन हमिदा,
(अल्लाह ने सुन ली जिसने उसी तारीफ की)

* पृष्ठ 41 से 44 देखें



क्रम
5

पहला सजदा

कहिये: "سبحان ربي الأعلى" x3
"सुभाना रब्बियल आला" 3 बार (मेरा
रब किसी भी कमी या दोष से पाक है, वो
बहुत आला, अति-उच्चतम है)



सजदे में जाते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
6

बैठना(जुलूस)

3-4 सेकंड के लिए इस स्थिति में
चुप बैठें



बैठते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
7

दूसरा सजदा

कहिये: "سبحان ربي الأعلى" x3
"सुभाना रब्बियल आला" 3 बार (मेरा
रब किसी भी कमी या दोष से पाक है,
वो बहुत आला, अति-उच्चतम है)



सजदे में जाते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
8

खड़े होना(क्रियाम)

पढ़ें: سورة الفاتحة
सूरह 'अल-फातिहा' *



खड़े होते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

* पृष्ठ 41 से 44 देखें



क्रम
9

झुकना (रुकू)

कहिये: "سبحان ربي العظيم" x3
"सुभाना रब्बियाल अज़ीम" 3 बार (मेरा
रब किसी भी कमी या दोष से पाक है, वो
बहुत अज़मत वाला है)



झुकने पर कहते हैं:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
10

खड़े होना (क्रियाम)

कहिये: "ربنا ولك الحمد"
"रब्बना व लकल हम्द" (ऐ हमारे रब,
आप ही के लिए तो तमाम तारीफें हैं)



खड़े होने पर कहते हैं: "सामि अल्लाहु लिमन हामिदा",
(अल्लाह ने सुन ली जिसने उसी तारीफ की)

क्रम
11

पहला सजदा

कहिये: "سبحان ربي الأعلى" x3
"सुभाना रब्बियल आला" 3 बार (मेरा
रब किसी भी कमी या दोष से पाक है, वो
बहुत आला, अति-उच्चतम है)



सजदे में जाते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
12

बैठना (जुलूस)

3-4 सेकंड के लिए इस स्थिति में चुप बैठें



बैठते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"



क्रम
13

दूसरा सजदा (सुजूद)

कहिये: "سبحان ربي الأعلى" x3
"सुभाना रब्बियल आला" 3 बार (मेरा
रब किसी भी कमी या दोष से پاک है, वो
बहुत आला, अति-उच्चतम है)



सजदे में जाते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
14

बैठना (जुलूस)

पढ़ें: التحيات
'तहियात' *



बैठते हुए कहे:
"अल्लाहु अकबर"

क्रम
15

सलाम करना (सलाम)

अपने चेहरे को दाईं ओर मोड़ें
कहिये: السلام عليكم
अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह
(आप पर अल्लाह की सलामती और
रहमत हो)



क्रम
16

सलाम करना (सलाम)

अपने चेहरे को बाईं ओर मोड़ें
कहिये: ورحمة الله
अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह
(आप पर अल्लाह की सलामती और
रहमत हो)



* पृष्ठ 41 से 44 देखें



इक़ामत

اللهُ أَكْبَرُ (६ مرات)
 أشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ (مرتين)
 أشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ (مرتين)
 حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ (مرتين)
 حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ (مرتين)
 قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ (مرتين)
 اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर (2x)
 अशहदु अंलाईलाहा इल्लल्लाह (2x)
 अशहदु अन्ना मुहम्मदूर रसूलुल्लाह (2x)
 हय्या अलल ससलाह (2x)
 हय्या अलल फलाह (2x)
 क़द क़ामती सलाह (2x)
 अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर ला
 ईलाहा
 इल्लल्लाह ।

अल्लाह सबसे बड़ा है। (चार बार)
 मैं इस बात का गवाह हूँ कि अल्लाह को
 छोड़कर कोई भी पूजा के योग्य नहीं है। (दो
 बार)
 मैं गवाह हूँ कि मुहम्मद (स.) अल्लाह के
 पैग़म्बर हैं। (दो बार)
 नमाज़ पढ़ने आओ। (दो बार)
 कामयाबी की तरफ आओ (दो बार)
 नमाज़ खड़ी हो गई है। (दो बार)
 अल्लाह सबसे बड़ा है। (दो बार)
 अल्लाह को छोड़कर कोई भी पूजा के योग्य
 नहीं है।

तवजीह (सना)

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ، تَبَارَكَ اسْمُكَ ، وَتَعَالَى
 جَدُّكَ ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ ، إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ ، لِلدَّي
 فَطَّرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ، خَنيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ

सुबहानका अल्लाहुम्मा व बि हम्दीका,
 तबारकइस्मुका, व त'आला जद्दुका, व ला
 इलाहा गैरुका, इन्नी वज्जहतु वज्रहिया
 लिल्लाज़ी फतरसस्मावती वल अर्ज़,
 हनिफ़व वमा अना मिन अल मुशारिकीन

ए अल्लाह मैं तेरी पाकि बयां करता हूँ
 और तेरी तारीफ करता हूँ और तेरा नाम
 बरकतवाला है, बुलंद है तेरी शान और नहीं है
 माबूद तेरे सिवा कोई। मैं अपना चेहरा उसकी
 ओर मोड़ता हूँ जिसने आकाश और पृथ्वी को
 पैदा किया, सभी झूठे पंथों को झूठलाता हूँ
 और सच्चे धर्म को स्वीकार करता हूँ, और मैं
 बहुदेववादियों में नहीं हूँ।



तहियात ए (सलाम)

التَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अत्ताहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु
वत्तैयिबातु, अस्सलामु अलैका
अय्युहन नबिय्यु रहमतुल्लाही व
बरकातहू, अस्सलामु अलैना व आला
इबादिल्लाहिस सालिहीन, अशहदु
अंला ईलाहा इल्ललाहू व अशहदु अब्र
मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलहू ।

तमाम बोल से अदा होनेवाली और बदन से अदा होनेवाली तमाम इबादते अल्लाह के लिए है। सलामती हो तुम पर ए नबी, और रहमत और बरकत हो सलामती हो हम पर और अल्लाह आपके नेक बन्दो पर। हम गवाही देते हैं की, अल्लाह के सिवाह कोई इबादत के लायक नहीं है। और हम गवाही देते हैं कि, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलय व सल्लम अल्लाह के नेक बन्दे और रसूल है।

तहियात बी (दरूद शरीफ)

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ فِي الْعَالَمِينَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ . رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ .

अल्लाहुम्मा सल्ली अला मुहम्मद व
आला आली मुहम्मद कमा सल्लैता
आला इब्राहिम वा आला आली
इब्राहिमा इन्नका हमिदुम माजिद.
अल्लाहुम्मा बारीक अला मुहम्मद व
आला आली मुहम्मद कमा बारकता
आला इब्राहिम वा आला आली
इब्राहिमा इन्नका हमिदुम माजिद.
रब्बना अतिना फिद दुनिया हसनता
, व फील आखिरति हसनता व किना
अज़ाबन नार

ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके घर वालों (और अनुयायियों) पर इसी तरह दरूद (रहमत सलामती) नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम और उनके घर वालों (और अनुयायियों) पर दरूद (रहमत सलामती) नाज़िल फ़रमाई। ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके घर वालों (और अनुयायियों) पर इसी तरह बरकतें नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम और उनके घर वालों (और अनुयायियों) पर बरकतें नाज़िल फ़रमाई। ऐ हमारे रब हमको दुनिया में भी भलाई दीजिए और आखिरत में भी भलाई दीजिए, और हम को आग के अज़ाब से बचा लीजिए



सूरह अल-फातिहा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ * الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ * مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ
* إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ * اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ *
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

बिस्मिल्लाहि ईर्रहमानीररहीम ।
अलहमुदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन.
अर्रहमान नि र्रहीम. मालिकी यौमीद्दीन.
इय्याका नाअबुदु व इय्याका नस्तईन.
इहदिनस सि रातल मुस्तक्रीम. सिरातल
लजिना अन अमता अलैहिम, गैरिल मग्जुबी
अलैहिम वला ज़ाल्लिन ।

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान
और बहुत ही रहीम है। (1)

(2) सभी तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो
तमाम क़ायनात (यूनियवर्ससेस) का पालने
वाला है (3) जो बहुत मेहरबान और बहुत
ही रहीम है। (4) क़यामत के दिन का
मालिक है। (5). हम तेरी ही इबादत करते
हैं, और तुझ ही से मदद मांगते हैं। (6) हमें
सीधा रास्ता दिखा। (7) उन लोगों का रास्ता
जिन पर तूने इनाम फ़रमाया, न कि उनका
जिन पर ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ, और
न भटकने वालों का।

सूरह अन-नास

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ * مَلِكِ النَّاسِ * إِلَهِ النَّاسِ *
مِنَ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ * الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ
النَّاسِ * مِنَ الْغَيْثِ وَالنَّاسِ

बिस्मिल्लाहि र्रहमानीररहीम
कुल आउजू बिरब्बिनास. मलिकीन्नास.
इलाहीन्नास. मिन शर्रिल वसवासिल
खन्नास. अल्लज़ी युवस विसू फ़ी
सुदूरीन्नास. मिनल जिन्नती वन्नास ।

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान
और बहुत ही रहीम है।

तुम कह दो मैं लोगों के परवरदिगार, लोगों के
बादशाह, लोगों के माबूद की पनाह माँगता
हूँ. शैतानी वसवसे की बुराई से पनाह माँगता
हूँ. जो (सुदा के नाम से) पीछे हट जाता है
जो लोगों के दिलों में वसवसे डाला करता है.
चाहे वो जिन्नात में से हो या इंसानों में से



सूरह अल-इखलास

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ * اللَّهُ الصَّمَدُ * لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ *
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

बिस्मिल्लाहि रंहमानी रहीम,
कुल हुवल्लहू अहद , अल्लाहुस्समद
लम यलिद वल्लम यूलद, वलम
यकुल्लहू कुफुवन अहद

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान
और बहुत ही रहीम है।

तुम कह दो कि अल्लाह एक है, अल्लाह
बरहक बेनियाज़ (सेल्फ-सफिशिएंट) है, न
उसने किसी को जना न उसको किसी ने जना,
और उसके जैसा कोई दूसरा है ही नहीं

सूरह अल-अस्र

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ * إِذَا الْإِنْسَانُ نَفَىٰ خُسْرٍ * إِلَّا الْآدِينَ عَامِرُونَ
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

बसिमिल्लाहि रंहमानीररहीम

वल अस्र. इन्नल इंसाना लफ़ी खुस्र.
इल्ललजनि आमनु वामलिससालेहाती
वतवासो बलि हक्की वतवासो
बसिसब्र.

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान
और बहुत ही रहीम है।

गवाह है गुज़रता समय, बेशक इन्सान
घाटे में है, सिवाय उन लोगों के, जो
लोग ईमान लाए, और अच्छे काम करते
रहे और आपस में हक का हुक्म और
सब्र की वसीयत करते रहे



हदीस नमाज़ की खूबियों पर

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - « إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءِ ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ لَا يَنْهَرُهُ إِلَّا الصَّلَاةُ لَا يُرِيدُ إِلَّا الصَّلَاةَ لَمْ يَخْطُ خَطْوَةً إِلَّا رَفَعَهُ اللَّهُ بِهَا دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ حَتَّى يَدْخُلَ الْمَسْجِدَ فَإِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ كَانَ فِي صَلَاةٍ مَا كَانَتْ الصَّلَاةُ تَحْسِبُهُ » .

यह वर्णन किया गया था कि अबू हुरैरा ने कहा:

"अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने कहा: 'जब आप में से कोई वुजू करता है और इसे अच्छी तरह से करता है, और मस्जिद को केवल नमाज़ के किसी अन्य मकसद के साथ नहीं आता है और दुआ के अलावा कुछ नहीं मांगता है, वह एक कदम नहीं उठाता है लेकिन अल्लाह उसके दरजे ऊंचे करता है, और उसके पापों में से एक पाप माफ़ कर देता है जब तक वह मस्जिद में से प्रवेश करता है। जब वह मस्जिद में प्रवेश करता है और जब तक वह नमाज़ की स्थिति में होता है, जब तक वह नमाज़ का इंतजार कर रहा होता है।"

इब्र माजा द्वारा दर्ज

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ « أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ شَهْرِ رَمَضَانَ شَهْرُ اللَّهِ الْمُحَرَّمُ وَإِنَّ أَفْضَلَ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْمُفْرُوضَةِ صَلَاةٌ مِنَ اللَّيْلِ » .

अबू हुरैरा ने बताया:

"अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने कहा: रमजान के बाद सबसे अहम रोज़ा अल्लाह का महीना अल-मुहर्रम है, और फ़र्ज नमाज़ के बाद सबसे अहम नमाज़ रात की नमाज़ है।

अबू दाऊद द्वारा दर्ज



अध्याय 10 - शब्दावली

अल-फ़ातिहा	कुरआन का पहला अध्याय
अज़ान	नमाज़ की पुकार
औराह	शरीर के निजी अंग
दोहर	दोपहर की नमाज़
फ़ज़्र	सुबह की नमाज़
फ़रीज़ा	अनिवार्य नमाज़ (या कोई इस्लाम का अनिवार्य कार्य)
इमाम	वह व्यक्ति जो जमात की नमाज़ का नेतृत्व कर रहा है
इक्रामाह	जमात की नमाज़ की शुरुआत की घोषणा करती है
इशा	रात की नमाज़
काबा	मक्का में मस्जिद अल-हरम के अंदर स्थित विशाल इमारत। यह आमतौर पर काले कपड़े में लिपटा होता है।
ख़ुतबा	शुक्रवार को इमाम द्वारा दिया गया उपदेश (या इसी तरह ईद की नमाज़ में या किसी अन्य अवसर पर दिया गया उपदेश)।
मगरिब	शाम की नमाज़
मुअज़्ज़िन	वह व्यक्ति जो नमाज़ अदा करने के लिए बुलाता है (आज़ान)
नजासा	शारीरिक अशुद्धियाँ जैसे रक्त, मूत्र इत्यादि
निध्यत	किसी कार्य को करने का दिल और दिमाग में इरादा करना



क़िबला	मक्का की दिशा जिस ओर मुसलमानों को नमाज़ अदा करते समय उस तरफ़ मुँह करना पड़ता है।
रकाअत	नमाज़ का एक चक्र जिसमें खड़े होकर कुरआन पढ़ना, झुकना और दो सजदे करना हैं।
सुन्नह	वैकल्पिक प्रार्थना (या इस्लाम में कोई वैकल्पिक कार्रवाई)।
सूरह	कुरआन का कोई भी अध्याय
तहारा	अनुष्ठान स्वच्छता की स्थिति
तराविह	सुन्नत नमाज़ जो रमज़ान के महीने में ईशा की नमाज़ के बाद पढ़ी जाती है।
तयम्मूम	पानी के बजाय स्वच्छ पृथ्वी से सूखा वुजू करना।
विल	यह सुन्नत नमाज़ है जिसमें एक या तीन रकात होते हैं। यह ईशा की नमाज़ के बाद पढ़ी जाती है।
वुजू	किसी भी नमाज़ से पहले शरीर के विशेष अंगों की सफाई।



الصلاة باللغة الهندية



Islamic Information Center

مركز التعريف بالإسلام

इस्लामिक सूचना केंद्र

सुल्तान काबूस ग्रैंड मस्जिद, मस्कत

सल्तनत ऑफ ओमान